चार जानवरों का संगीत

माइकल फोरमैन

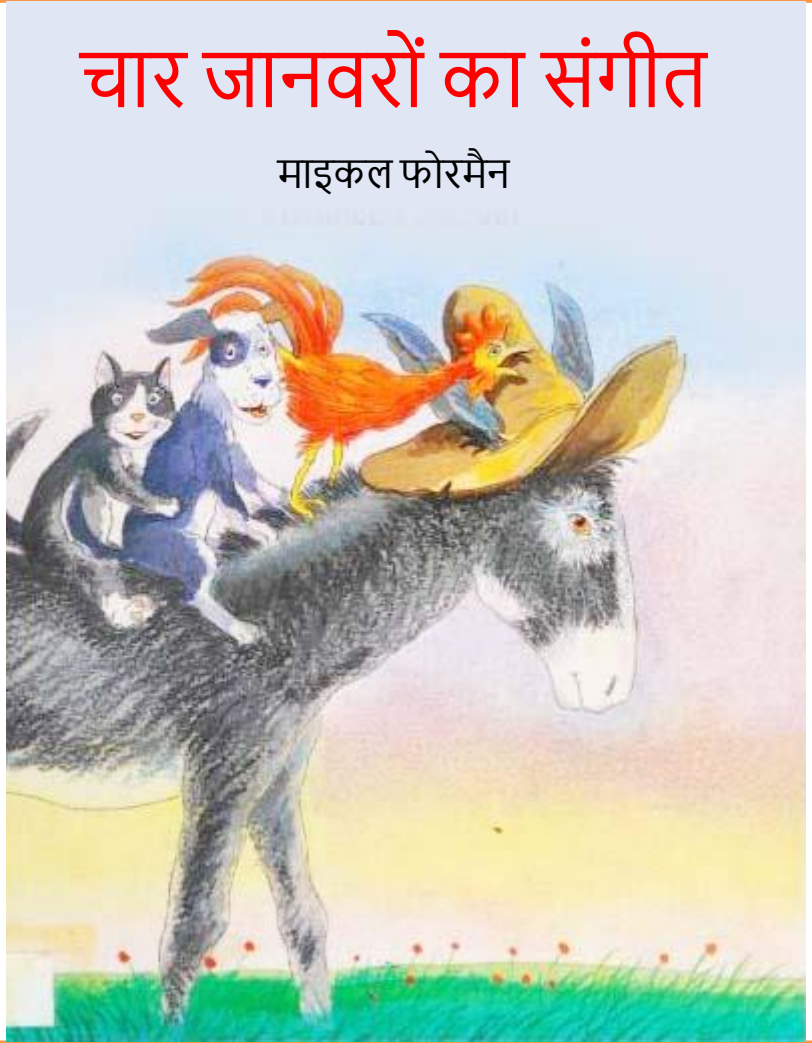

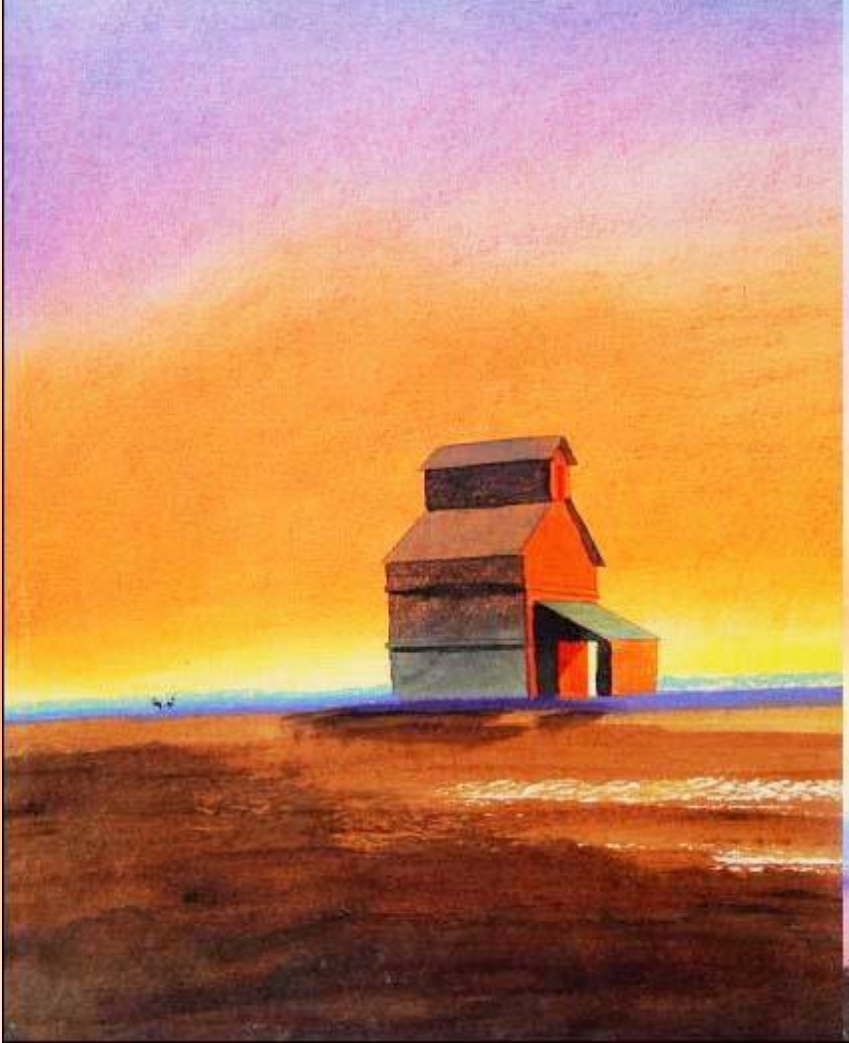

चार जानवरों का संगीत

माइकल फोरमैन

बहुत समय पहले की बात है. एक बूढ़ा गधा था. उसने जीवन भर कड़ी मेहनत की थी, लेकिन क्योंकि अब जब वो कमज़ोर हो चला था, इसलिए उसका मालिक उससे छुटकारा पाना चाहता था.

गधा कसाईखाने में किसी का पालतू जानवर का भोजन नहीं बनना चाहता था, इसलिए उसने शहर भागने और संगीतकार बनने के अपने सपने को पूरा करने का फैसला किया.

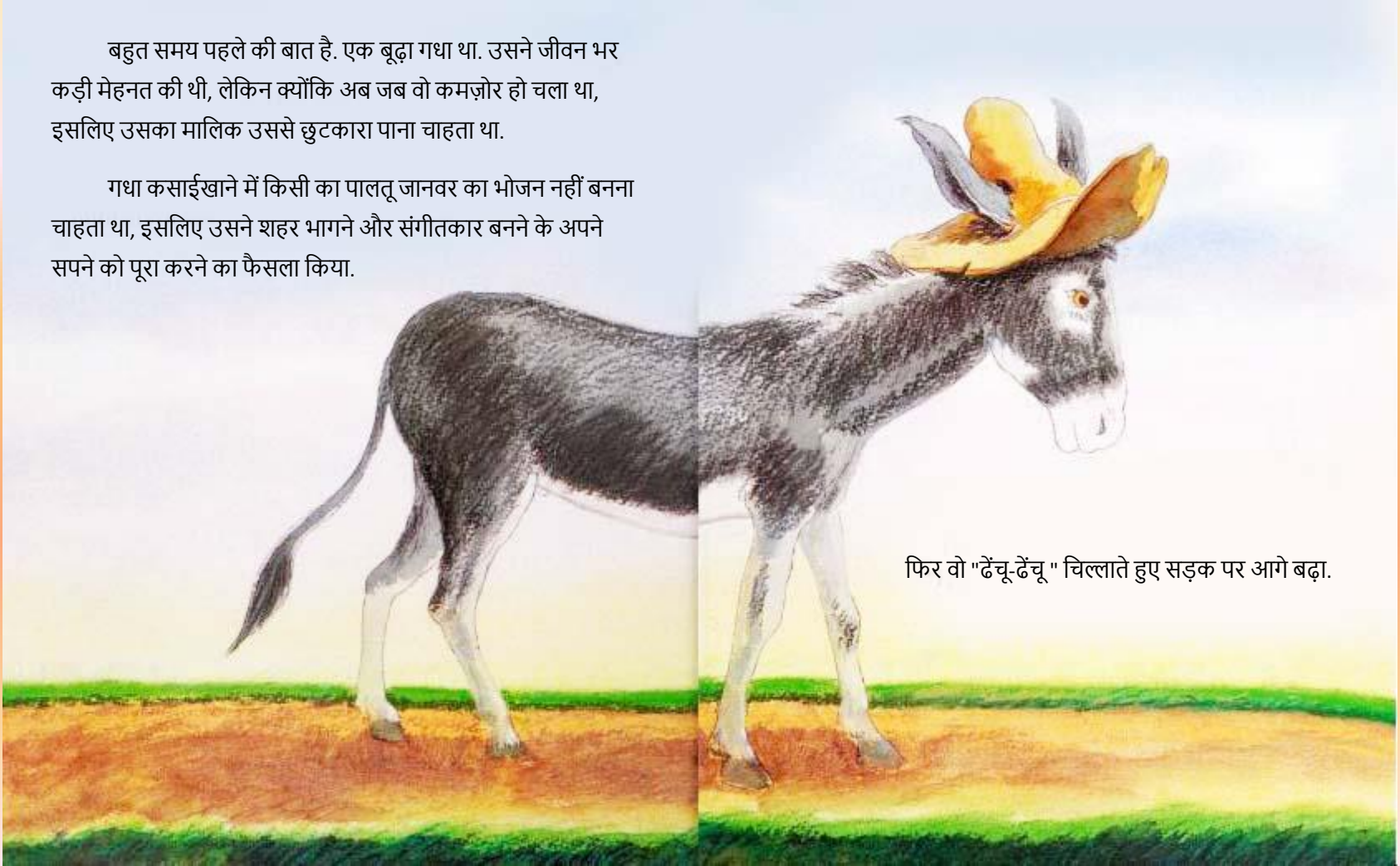

फिर वो "ढेंचू-ढेंचू" चिल्लाते हुए सड़क पर आगे बढ़ा.

जल्द ही सड़क के किनारे उसे एक बूढ़ा कुत्ता मिला.
"क्यों भाई कुत्ते, तुम इतने दुखी क्यों लग रहे हो?"

"ओह!" कुत्ते ने हांफते हुए कहा. "क्योंकि मैं अब खरगोशों का शिकार नहीं कर पाता हूँ, इसलिए मेरे मालिक को लगता है कि मैं अब किसी लायक नहीं हूं और वो मुझसे छुटकारा पाना चाहता है. आगे मेरा क्या होगा, मुझे नहीं पता?"

"तुम मेरे साथ क्यों नहीं चलते?" गधे ने पूछा. "हम एक साथ संगीतकार बनेंगे."

फिर "ढेंचू-ढेंचू, भौं, भौं," करते हुए वे सड़क पर आगे बढ़े.

अगले मोड़ पर ही उन्हें एक बिल्ली दिखाई दी. बिल्ली का चेहरा लटका हुआ था और वो बहुत उदास बैठी थी.

"तुम इतनी उदास क्यों हो, बिल्ली रानी?" गधे ने पूछा.

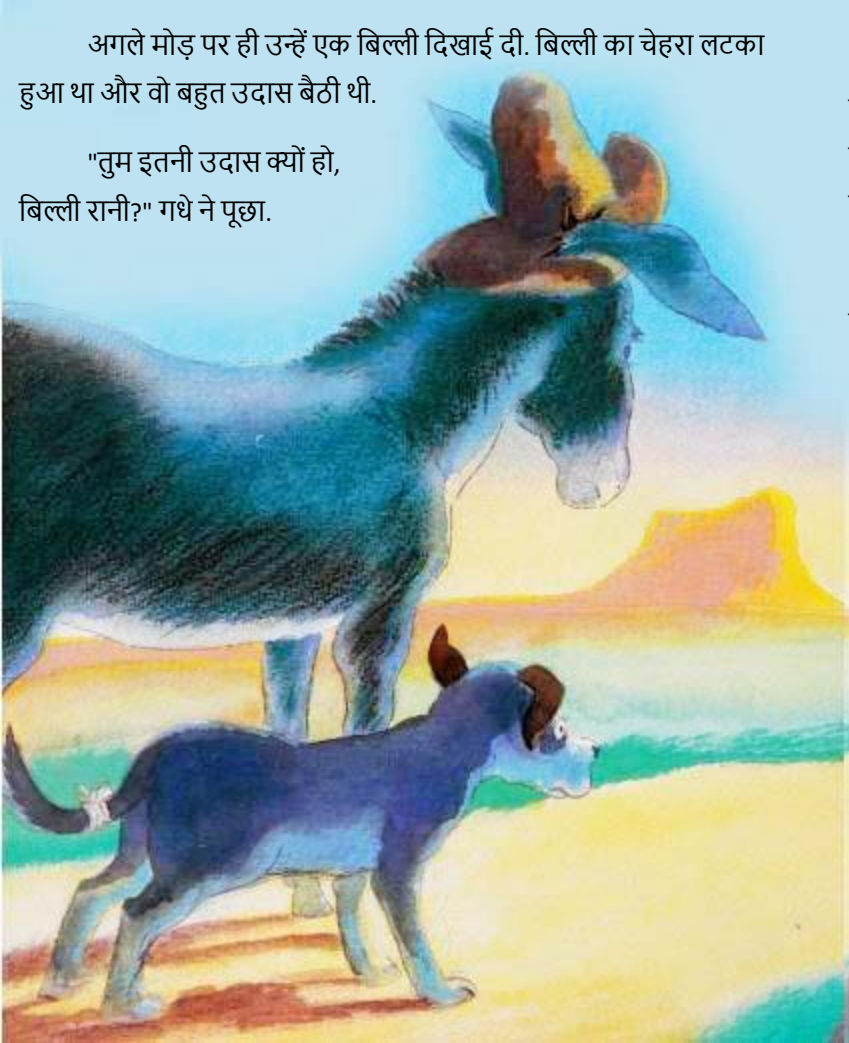

"ओह!" बिल्ली ने एक गहरी सांस ली. "अब बूढ़ी हो गई हूं और चूहों को नहीं पकड़ पाती हूँ और मुझे आग के पास बैठना पसंद है, इसलिए मेरी मालकिन सोचती है कि मैं अब घर में रहने लायक नहीं हूं और अब वो मुझे डुबाना चाहती हैं. अभी तक तो मैं ज़िंदा हूं, लेकिन आगे मेरा क्या होगा यह मुझे नहीं पता."

"सभी बिल्लियाँ गाना पसंद करती हैं," गधे ने कहा. "तुम भी हमारे साथ बड़े शहर चलो और वहां हमारे बैंड में शामिल हो."

फिर "ढेंचू-ढेंचू, भौं, भौं, मियाऊं, मियाऊं," के साथ वे सड़क पर आगे बढ़े.

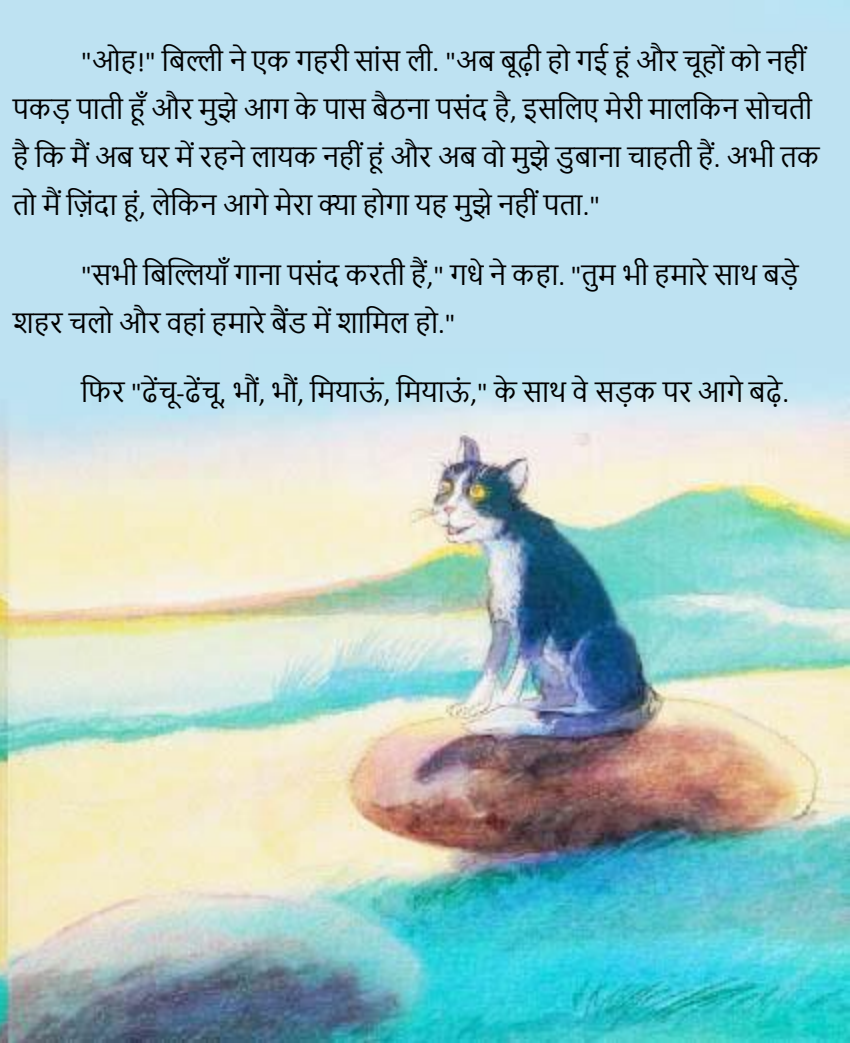

जल्द ही वे एक खेत में पहुंचे और वहाँ उन्होंने बाड़ पर बैठे एक मुर्गे को देखा, जो बहुत उदास दिख रहा था.

"क्या बात है मेरे दोस्त!" गधे ने कहा. "तुम ऐसे क्यों रो रहे हो जैसे कल होगा ही नहीं?"

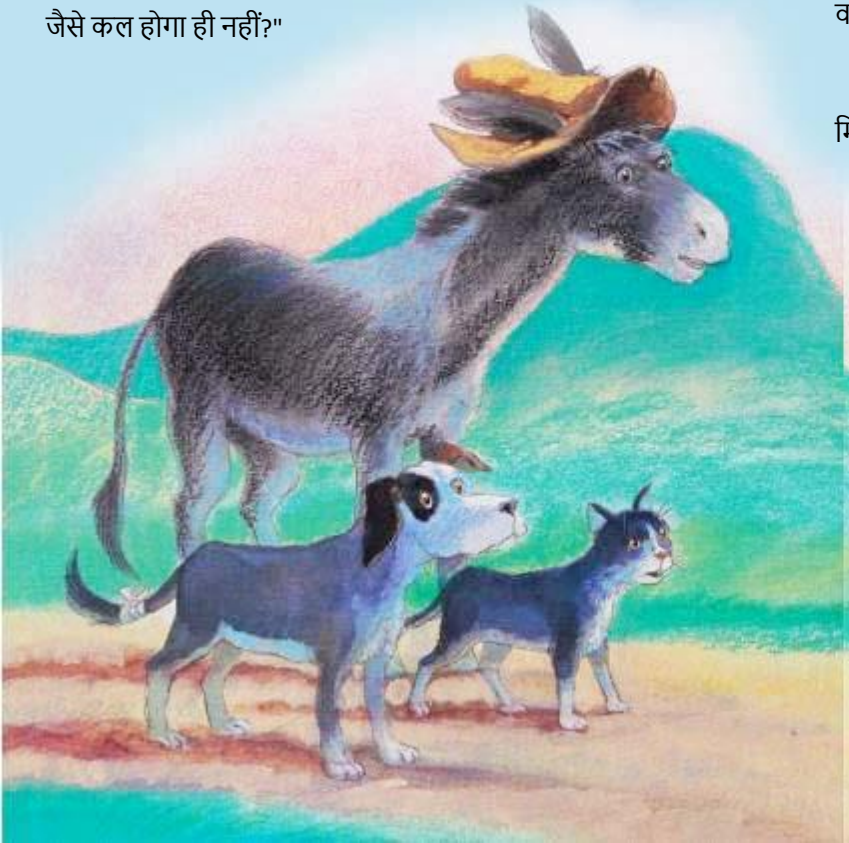

"सच में मेरे लिए कल नहीं होगा!" मुर्गा रोया. "किसान की पत्नी आज रात मुझे काटकर पकाने जा रही है. यही आखिरी मौका है इसलिए मैं गाना गा रहा हूं."

गधे ने कहा, "तुम अपना गाना शहर में गाना. वहां तुम्हें अपने संगीत के कई कद्रदान मिलेंगे."

फिर वे चारों, "ढेंचू-ढेंचू, भौं, भौं, मियाऊं, मियाऊं, कुकडूं, कुकडूं," करते हुए आगे बढ़े.

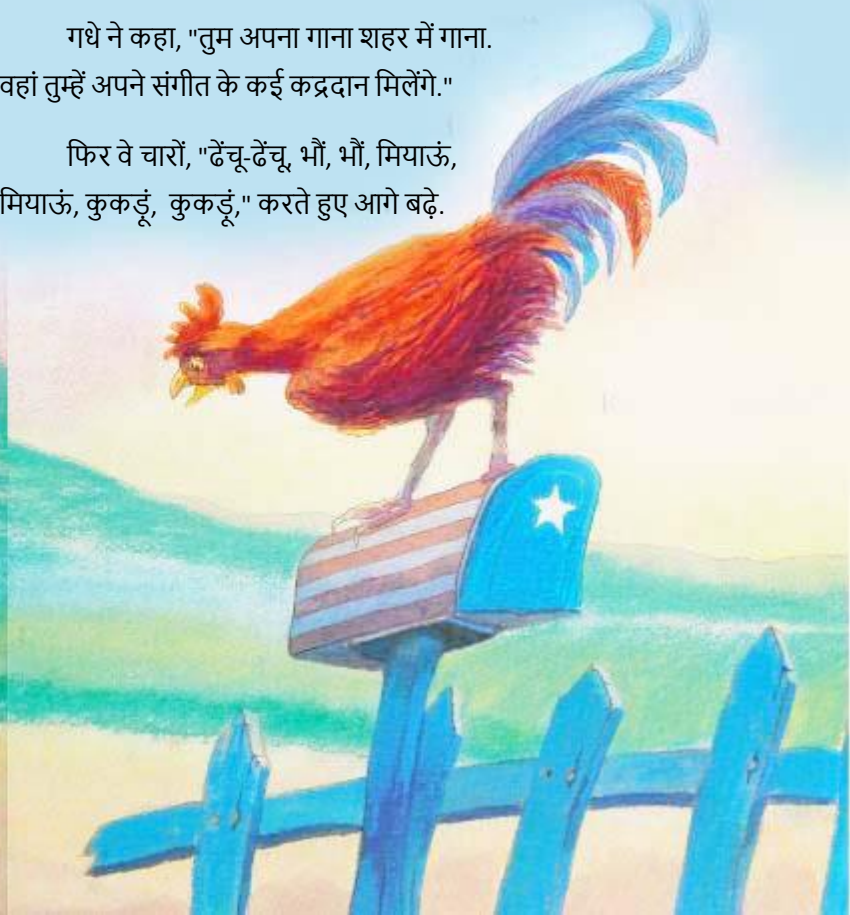

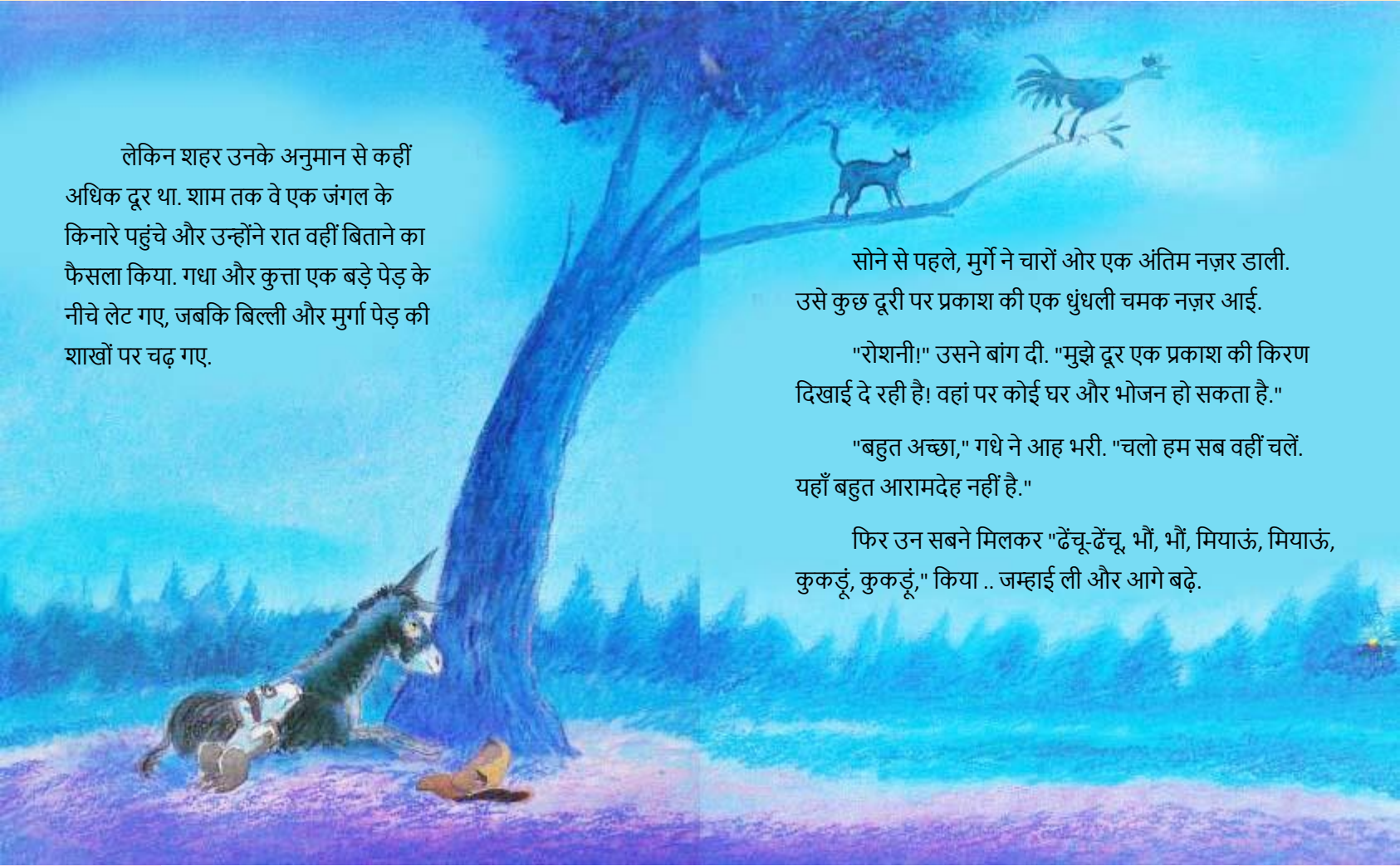

लेकिन शहर उनके अनुमान से कहीं अधिक दूर था. शाम तक वे एक जंगल के किनारे पहुंचे और उन्होंने रात वहीं बिताने का फैसला किया. गधा और कुत्ता एक बड़े पेड़ के नीचे लेट गए, जबकि बिल्ली और मुर्गा पेड़ की शाखों पर चढ़ गए.

सोने से पहले, मुर्गे ने चारों ओर एक अंतिम नज़र डाली. उसे कुछ दूरी पर प्रकाश की एक धुंधली चमक नज़र आई.

"रोशनी!" उसने बांग दी. "मुझे दूर एक प्रकाश की किरण दिखाई दे रही है! वहां पर कोई घर और भोजन हो सकता है."

"बहुत अच्छा," गधे ने आह भरी. "चलो हम सब वहीं चलें. यहाँ बहुत आरामदेह नहीं है."

फिर उन सबने मिलकर "ढेंचू-ढेंचू, भौं, भौं, मियाऊं, मियाऊं, कुकडूं, कुकडूं," किया .. जम्हाई ली और आगे बढ़े.

जब वो करीब पहुंचे, तो उन्होंने देखा कि रोशनी सड़क के किनारे स्थित एक पुराने कैफे से आ रही थी.

"स्वादिष्ट!" कुत्ते ने अपनी जीभ चटकारते हुए कहा.

"एक कैफे, क्या बात है!"

"पर हमारे पास एक धेला तक नहीं है," बूढ़े गधे ने चिल्लाते हुए कहा. "और वैसे भी मुझे कैफे बंद लगता है."

खिड़की में से झाँकने के लिए गधा काफी ऊंचा था.

"ओह!" गधा फुसफुसाया. "वो तो बंद से भी बदतर है. कैफे लुटेरों से भरा है."

"क्या?!" वे सब हांफने लगे.

कुत्ते ने खुद देखने के लिए गधे की पीठ पर छलांग लगाई. बिल्ली कुत्ते की पीठ पर कूदकर बैठी और मुर्गा, बिल्ली के सिर पर चढ़ गया.

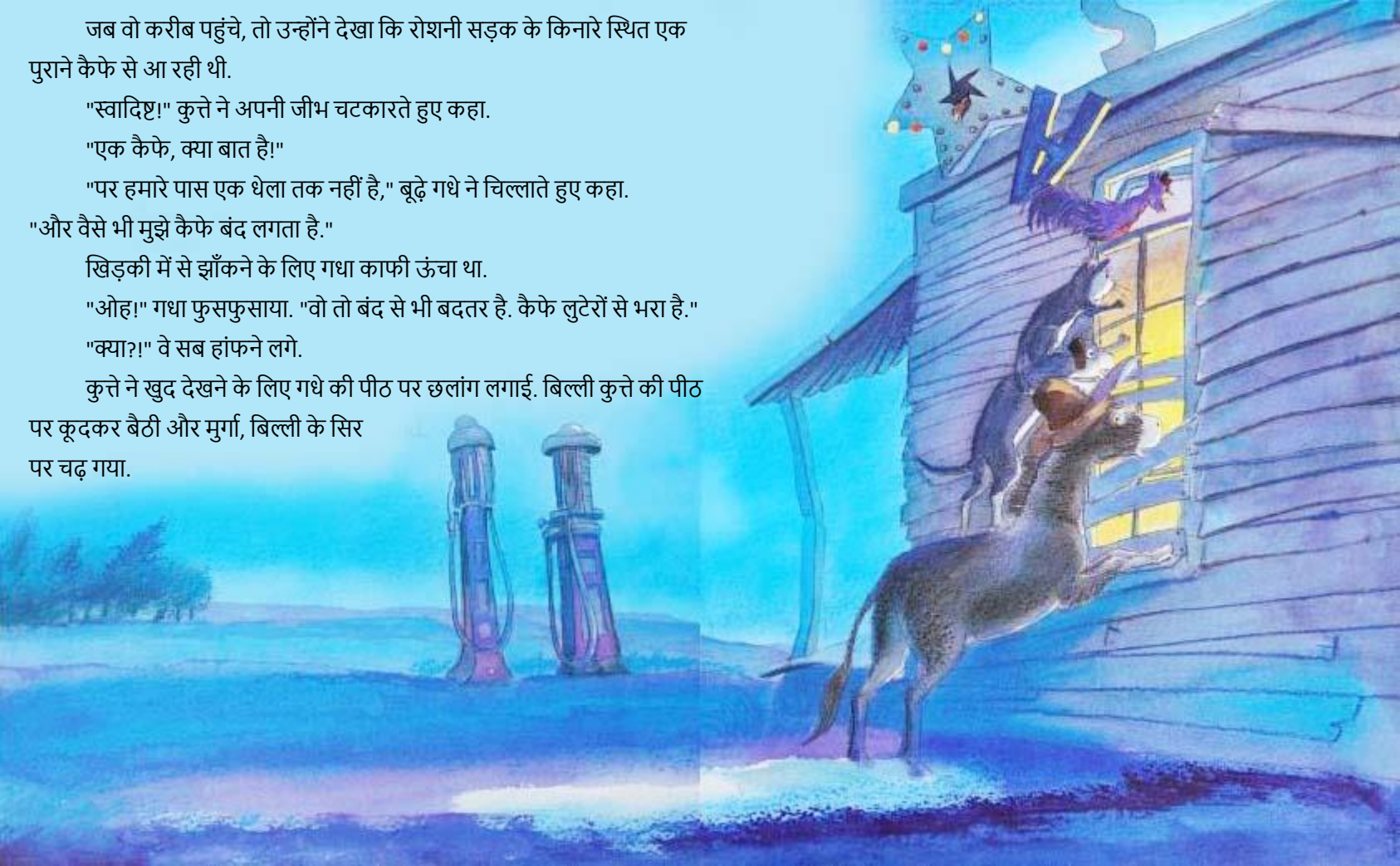

फिर धड़ाम! के साथ पुरानी खिड़की टूट गई और वे सभी टूटे शीशे की बौछार में कैफे के अंदर जा गिरे.

गधा रम्भाया, कुत्ता भौंका, बिल्ली मिमियाई और मुर्गे ने बाँग दी. लुटेरों ने अपने हाथ ऊपर कर दिए और वे दहशत में अपना खाना और पैसे पीछे छोड़कर भाग गए.

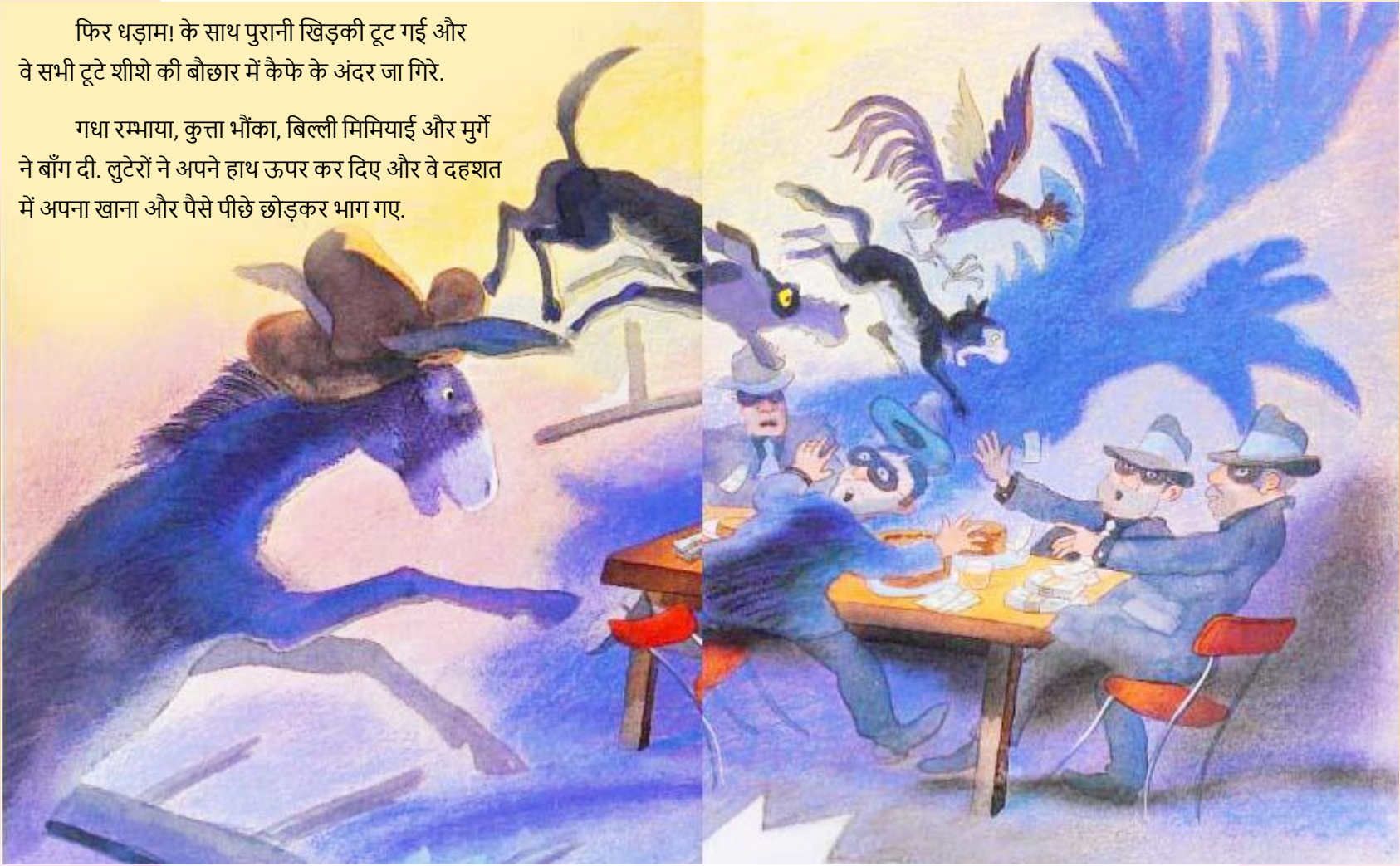

जानवरों ने मेज पर देखा.

"इससे कहीं अधिक बुरा हो सकता है," कुत्ते ने मुस्कुराते हुए कहा.

"भला इससे बेहतर और क्या हो सकता है!" बूढ़ी बिल्ली ने कहा.

फिर सब जानवरों ने मिलकरअच्छा भोजन खाया. उन्होंने इतना स्वादिष्ट भोजन पहले कभी नहीं खाया था. फिर चारों दोस्तों ने अपने-अपने सोने के लिए आरामदायक स्थान चुने.

गधा, जिसे साफ़ हवा पसंद थी, बरामदे में सोया, कुत्ता दरवाजे के पीछे सोया, बिल्ली को रसोई की गर्मी पसंद आई. फिर मुर्गा ने लाइट बुझा दी और वो छत पर उड़कर बैठ गया. चारों जल्दी ही सो गए.

लेकिन लुटेरे ज्यादा दूर नहीं गए थे.

"हम अपनी मेहनत की सब लूटपाट इस तरह पीछे छोड़कर नहीं जा सकते!" चोरों के लीडर ने कहा. और जब उसने लाइट बुझते हुए देखा तो उसने अपने एक आदमी को कैफे में देखने के लिए वापस भेजा.

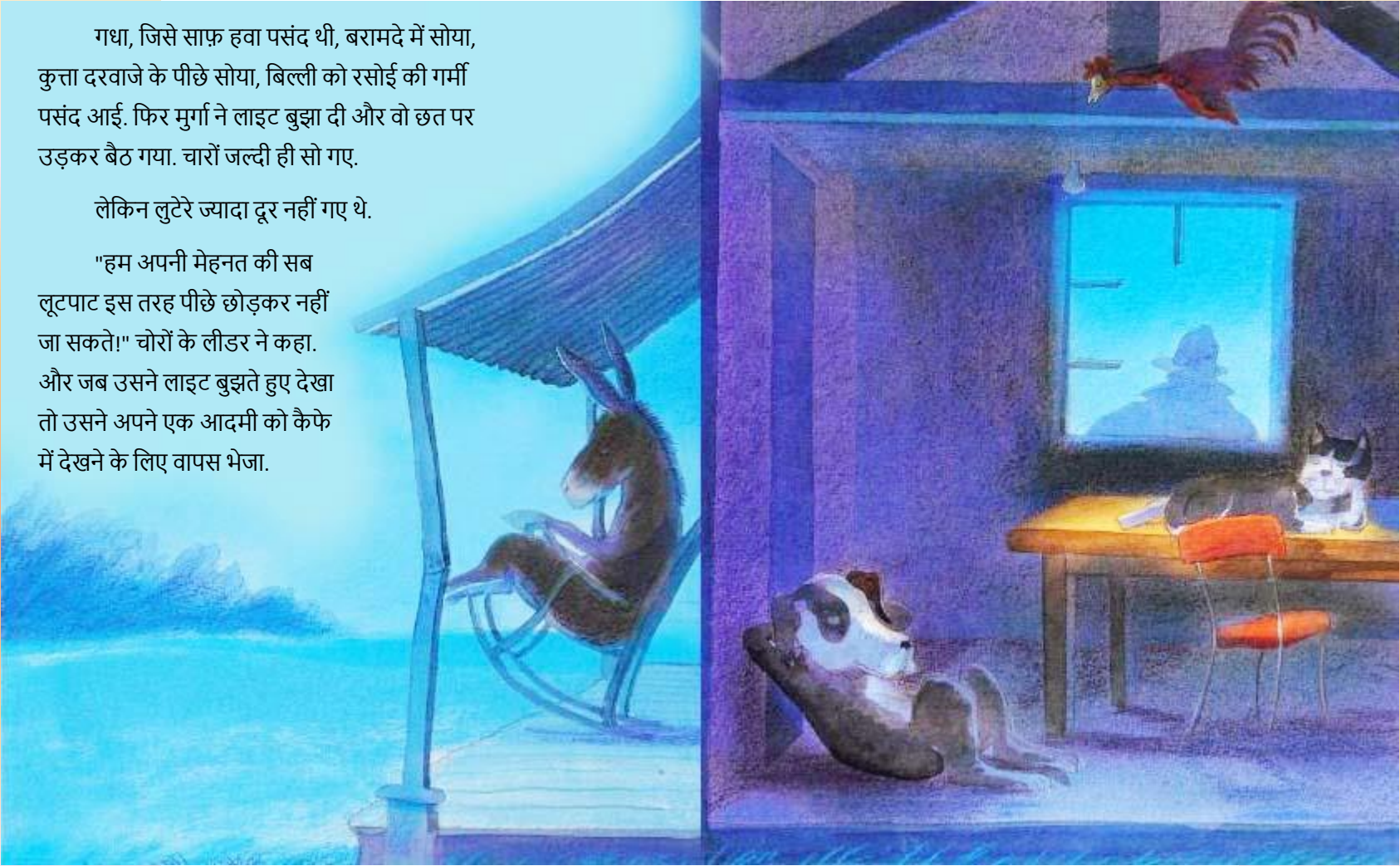

लुटेरों के आदमी ने सब कुछ शांत पाया! जब वो रसोई की खिड़की से अंदर चढ़ा - तो बिल्ली ने उस पर हमला किया.

बिल्ली ने चोर के चेहरे को अपने पंजों से नोचा-खरोंचा.

घबराकर लुटेरा रसोई से बाहर भागा और गलती से वो कुत्ते के ऊपर चढ़ गया. कुत्ते ने तुरंत उसके पैर को काटा. मुगे ने लुटेरे के सिर पर चोंच मारी और गधे ने उसे इतनी जबरदस्त दुलत्ती मारी कि वो लुटेरा हवा में उड़ता हुआ बाहर गया.

जब गिरोह के बाकी सदस्यों ने अपने साथी लुटेरे को लंगड़ाते हुए और खून से लथपथ देखा, तो उन्होंने पैसे वापस पाने की पूरी उम्मीद छोड़ दी और वे रात के अँधेरे में गायब हो गए.

उसके बाद वो चारों दोस्त कभी शहर नहीं गए.

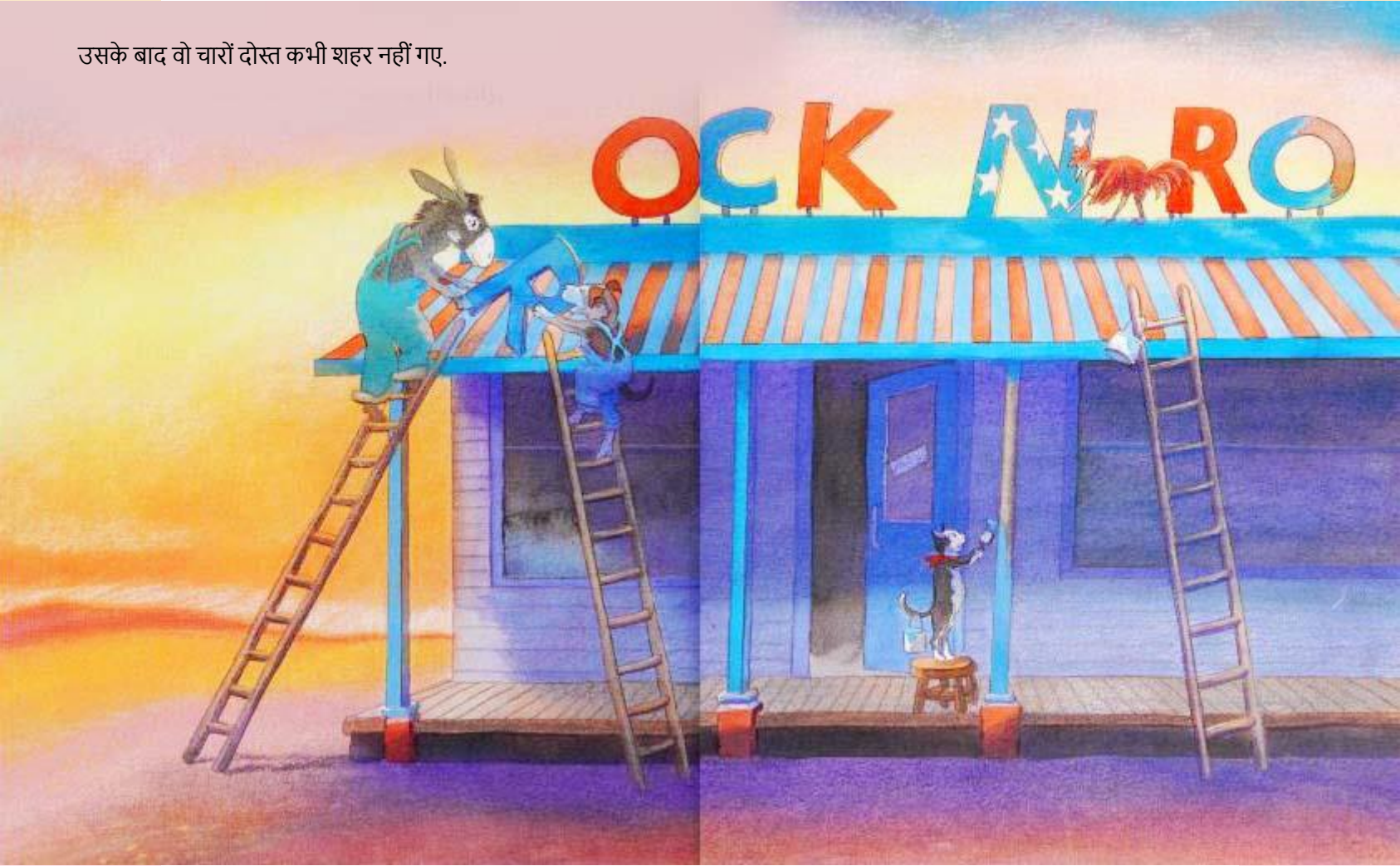

अब उन्हें शहर जाने की जरूरत ही नहीं थी.
अब शहर ही उनके पास आ गया था ...

समाप्त